Chap-1

प्रथम अध्याय

# गोविन्द गिल्लाभाई : व्यक्तित्व परिचय

प्रथम अध्याय

# गोविन्द गिल्लाभाई : व्यक्तित्व परिचय

गुजरात की धरती हिन्दी-साहित्य के लिए सदैव से फलवती सिद्ध हुई है, यहाँ अनेक ऐसे प्रातिभ व्यक्तित्व जन्मे हैं जिनकी कारियित्री प्रतिभा ने न केवल गुजरात को ही गौरवान्वित किया है, वरन् हिन्दी साहित्य के भण्डार को भी समृद्ध किया है । अखा, दयाराम, नरसिंह मेहता, प्रेमानन्द, दलपतराम आदि वरिष्ठ कवियों ने गुजरात की धरती को काव्य रस से सराबोर किया है ।

गोविन्द गिल्लाभाई इसी संवेदनशील अंचल के एक ऐसे अभिनव तथा आचार्य कवि थे, जिन्होंने अपने वरिष्ठ काव्य सृजन से न केवल गुजरात के हिन्दी कवियों में ही अग्रगण्य स्थान बनाया, वरन् तत्कालीन ब्रजभाषा के राष्ट्रीय कवियों में भी उनका प्रतिष्ठित स्थान बना था, किसी भी क्षेत्र के किसी भी वरिष्ठ आचार्य कवि से उनके कृतित्व की तुलना की जा सकती है ।

वैसे भी गुजरात के मरुस्थली प्रदेश कच्छ और भुज में ब्रजभाषा काव्य के प्रशिक्षण हेतु ब्रजभाषा काव्य पाठशाला की स्थापना महाराजा लखपति सिंह ने की थी, जिसके आदि कुलपति जैनाचार्य भट्टारक कुँअर कुशल थें और यह पाठशाला लगभग दो सौ वर्ष पर्यन्त सुचारु रूप से चली । इस ब्रजभाषा काव्य पाठशाला ने देश को अनेक स्वनाम धन्य ब्रजभाषा के वरिष्ठ आचार्य कवि भी प्रदान किए । इस पाठशाला का संवर्द्धनव्यय राज्य प्रशासन की ओर से वहन किया जाता था। यह एक अप्रतिक उदाहरण है जो गुजरात के हिन्दी काव्य प्रेम को प्रमाणित करता है ।

गोविन्द गिल्लाभाई गुजरात के सौराष्ट्र अंचल में भावनगर के सिंहोर गाँव में सम्वत्

1905 में जन्मे थे । सिंहोर गाँव बहुत दिन तक गोविन्द गिल्लाभाई के कारण प्रख्यात रहा और बाद में भी इसी कारण साहित्यकारों में ध्यानाकर्षित भी रहा ।

गोविन्द गिल्लाभाई का जन्म जिस सिंहोर ग्राम में हुआ वह सोलहवीं शताब्दी से अठारहवीं शताब्दी तक सौराष्ट्र प्रदेश की प्रमुख राजधानी भी रहा है । इसका पूर्ववर्ती नाम सिंहपौर था ।

गोविन्द गिल्लाभाई जाति के चौहान राजपूत थे किन्तु अपने पूर्वजों की वृत्ति के कारण उन्हें 'खवास' कहा जाता था । राजस्थान में खवास का कार्य खास सेवा में नियुक्त नाई जाति के लोग करते हैं । गुजरात में तथा सौराष्ट्र में खवास का अर्थ इस जातिविशेष से नहीं जुडता। इस प्रदेश में विशेष तथा अंतरंग सेवा में संलग्न चाकरों को इस सीमा में लिया जाता है । सौराष्ट्र में इस वर्ग में अनेक मध्यवर्गीय जातियाँ समाविष्ट हो गयी हैं, गोविन्द गिल्लाभाई के ही शब्दों में - ''आजकल काठियावाड में 'खवास' एक स्वतन्त्र जाति बन गई है और उनमें बहुत-सी जातियों का मिश्रण हो गया है क्योंकि जिसके साथ राजा खाते पीते थे, उनके साथ खवासों को भी खाना पीना पड़ता है और राजा प्रथम तेरह कौमों से खाने-पीने का व्यवहार रखते थे इसलिए उनको 'तेर त्रसली' (तेरह खाने के बर्तन) कहते थे । किन्तु अब कुछ नियम नहीं रहा है । तथापि खवासों में जो असल राजपूत कौम है, वह अपने बेटा-बेटी को अपनी जाति के राजपूतों में देते लेते हैं इतना नियम यह लोगों ने रखा है ।''[1]

इससे आभास होता है कि गोविन्द गिल्लाभाई के पूर्वज राजपूत ही थे, किन्तु कालान्तर मे अपनी विशिष्ट सेवाओं के कारण 'खवास' कहलाने लगे होंगे । इतिहास के प्रमाणानुसार सौराष्ट्र के जिन राजपूतों के साथ जमींदारी या स्वयं की खेती की जमीन नहीं रहती थी, वे किसी न किसी राजा के आश्रय में पनाह ले लेते थे और आश्रयी सेवा को 'खवासी' के नाम से कहा गया होगा । प्रथम प्रकार के राजपूत सौराष्ट्र के कारडिया राजपूत थे और दूसरे प्रकार के 'खवास' ।[2]

गोविन्द गिल्लाभाई दूसरे प्रकार के राजपूत थे, आज भी वल्लभ सम्प्रदाय में अनेक ब्राह्मण वर्ग गोस्वामी कुल की खवासी करते हैं, किन्तु उन्हें हेय दृष्टि से नहीं देखा जाता और नाहीं उन्हें जाति से बहिष्कृत किया जाता है ।[3]

मूलरूप से इनके पूर्वज राजस्थान से सौराष्ट्र आए थे, स्वयं गोविन्द गिल्लाभाई इस विषय में लिखते हैं - 'हमारे मूल पुरखा जाति के चौहान राजपूत मारवाड में जोधपुर के

अग्निकोन में तीस कोस पर पीपलोद गॉव में रहते थे, वहॉ कुछ कुटुम्ब में कलह होने से दो भाई रिसाइ के द्वारका के तरफ यात्रा करने को चले आए और द्वारकानाथ का दर्शन करके काठियावाड में घूँमते-फिरते उडसर वैयावाड में आये तब वहॉ छोटे-छोटे जमींदार जूनागढ के रावंशी सरवैया ठाकुर थे । उस समय लूटपाट और लड़ाइयॉ बहुत चलती थी, इसलिए सरवैया ठाकुरों ने इन दोनों भाइयों को सम्मान करके रख लिया, उनमें से एक लडाई में काम आ गए और दूसरा हीरा जी नाम का रहा जो उदास होकर अपने देश की तरफ जाने को तैयार हुआ। परन्तु सरवैया ठाकुर ने बहुत आग्रह से एक कारडिया राजपूत की कन्या के साथ लग्न करवा करके अपने रख लिए उनको जो संतति भई वही हमारा कुटुम्ब है ।

जोधपुर निवासी तथा प्रसिद्ध साहित्यकार मुन्शी देवी प्रसाद जी ने गोविन्दगिल्लाभाई को पत्र लिखकर यह पता लगवाया था कि पीपलोद वर्तमान सोजत परगने के अन्तर्गत आता है तथा आजकल वहाँ चौहान राजपूत नहीं रहते । उसके निकटवर्ती गाँव शिवराड में आज भी राजपूतों के बहुत से पर हैं ।[4]

गोविन्द गिल्लाभाई ने प्राप्त सूत्रों से जानकारी एकत्र करते हुए उल्लेख किया है कि सिहोर के महाराजा भावसिंहजी (जिन्होंने सन् 1722 में भावनगर की स्थापना की) के बड़े लड़के अखैराम जी का विवाह भी सरवैया के ठाकुर की कन्या से हुआ था । उन्हीं अखैरामजी की वृद्धावस्था में तथा पुत्र बखत सिंह जी की बाल्यावस्था में सरवैयाणी महारानी ने अपने पितृगृह से एक वृद्धा को उसके तीन पुत्रों के साथ सेवा टहल के लिए बुलवा लिया था तथा उस वृद्धा के वंशज किले में निवास करते आए हैं । सिंहोर में आने से पहले गोविन्द गिल्लाभाई के पूर्वज राजदरबार में नौकरी किया करते थे ।[5]

इसी वृद्धा के वंश में गोविन्द गिल्लाभाई का जन्म हुआ था उनका वंश वृक्ष इस प्रकार दिया गया है[6] -

गोविन्द गिल्लाभाई के समय में उनका पूरा परिवार सिंहोर में ही था आजकल इनके कुछ वंशज सिंहोर में हैं और कुछ सिंहोर के बाहर भी जाकर स्थायी रूप से बस गए हैं ।

इनके पिता का नाम गिल्लाभाई तथा माता का नाम लविंगाबाई था । इन्हीं लविंगा बाई की कोख से गोविन्द का जन्म श्रावण सुदि 11 सोमवार सम्वत् 1905 को प्रातःकाल में हुआ था । इनके तीन भाई और थे नथु, कहान तथा लक्ष्मण इनकी गंगा तथा गौतमी नामक दो बहनें भी थीं, गोविन्द जी इन सबसे बड़े थे ।[7]

अपने बाल्य काल की मधुर स्मृतियों को गोविन्द जी ने सिंहोर में ही सुरक्षित रखा इनकी प्रारम्भिक शिक्षा भी इसी सिहोर ग्राम में हुई । हालांकि शिक्षा प्राप्त करने की बहुत अच्छी सुविधा तो यहां नहीं थी किन्तु इनके पिता गिल्लाभाई सिंहोर के किले में नौकरी करते थे, इसलिए उन्होंने यथा शक्ति व्यवस्ता की ।[8]

परमी भक्त नामक एक अध्यापक थे, जो जाति से राजपूत थे, किन्तु गाँव के बच्चों को

पढ़ाने का भी कार्य करते थे। इन्हीं परमीभक्त राजपूत ने गोविन्द गिल्लाभाई को प्रारम्भिक शिक्षा प्रदान की।[9]

बाद में सन् 1885 में सिंहोर के राज्य प्रशासन की ओर से एक गुजराती स्कूल का प्रारम्भ हुआ, यहां पर भावनगर के श्रीमाली शिवशंकर गोविन्दराय ने गोविन्द गिल्लाभाई को सातवीं तक शिक्षा प्रदान की।[10]

बाद में उच्चशिक्षा की व्यवस्था के अभावमें गोविन्द गिल्लाभाई अपनी पढ़ाई आगे न कर सके।

गोविन्द गिल्लाभाई के बाल्यावस्था में ही सिंहोर के लोकागच्छ के श्वेताम्बरी जैन साधु श्री दाना चन्द्र जी का नाम विस्मृत नहीं किया जा सकता। श्री दानाचन्द्रजी साहित्य शास्त्र के उद्भट विद्वान थे और इन्हीं के संसर्ग से गोविन्द गिल्लाभाई के मनमें कविता के प्रति लगाव पैदा हुआ।[11]

इन्हीं दानाचन्द्र जी ने गोविन्द गिल्लाभाई को शामल भट्ट की कृतियों का अध्ययन कराया तथा और भी अनेक नाटक, उपन्यास महाकाव्य आदि का अध्ययन कराया। इन्हीं दाना चन्द्र जी से गोविन्द गिल्लाभाई ने पिंगलशास्त्र का तथा काव्यशास्त्र का अध्ययन किया था।

श्री दाना जी के अतिरिक्त और भी अनेक वरिष्ठ कवि और साहित्यकार उस समय गोविन्द गिल्लाभाई के सम्पर्क में आए थे, जिन्होंने गोविन्द गिल्लाभाई के जिज्ञासु हृदय को साहित्य शास्त्र के अनेक गम्भीर विषयों से परिचित कराया, **स्मरण पोथी** में उल्लिखित विवरण के अनुसार - ''भावनगर दरबार में उपस्थित होने के लिए आने वाले अनेक कवि और साहित्यकार सिहौर में ठहरते थे, तथा किले में आतिथ्य प्राप्त करते थे। गोविन्दजी के पिता गिल्लाभाई भावनगर दरबार के आतिथियों का स्वागत करने के लिए भी नियुक्त थे, अतः किले में ठहराने तथा उनके आतिथ्य का नैतिक दायित्व भी था। इससे गोविन्दभाई को सहज ही ऐसे विद्वानों का सम्पर्क और सामीप्य प्राप्त हो जाता।'[12]

भावनगर के महाराजा श्री वखत सिंहजी तथा उनके युवराज श्री विजय सिंह जी के प्रशासनकाल में दशहरा महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था तथा इस प्रसंग पर देश के अनेक प्रतिष्ठित कवियों और साहित्यकारों को भी आमंत्रित किया जाता था। इस प्रसंग पर श्रेष्ठ कवि एवं कलाकारों का सम्मान किया जाता था। गोविन्द गिल्लाभाई की साहित्य में अभिरुचि इन्हीं कारणों से बढ़ती गई।

गोविन्दगिल्ला भाई ने स्वयं कहा है ''राव चारणों की वार्ता सुनने और विद्या पर भाव होने से इतिहास पुरान, उपन्यास, नाटक चरित्र, कथा आदि के अनेक विषयों के ग्रंथ निरंतर पढ़ा करते थे उनसे तथा विद्वानों के प्रसंग से विधा साहित्य पर विशेष रुचि हुई ।[14]

गोविन्दगिल्ला भाई ने चाहे विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं की और सातवीं कक्षा से वह आगे न पढ़ सके, किन्तु व्यवहारिक रूप से तथा व्यक्तिगत रुचि के कारण विद्वानों और साहित्यकारों के सम्पर्क से उन्होंने अनेक विषयों में विद्वता प्राप्त की । उन्होंने साहित्यके अतिरिक्त संगीत, छन्द, पुरातत्व, पुराण, वेद आदि में विशेष रुचि प्रदर्शित की, उन्होंने पिंगलशास्त्र तथा कोश साहित्य का विशेष ज्ञान प्राप्त किया और बाद में उन्होंने स्वयं भी अनेक पिंगल शास्त्र के तथा कोश से सम्बन्धित ग्रंथों का अध्ययन किया, इनकी निजी डायरियों में संस्कृत शास्त्रीय ज्ञान का अनुमान किया जा सकता है ।

इनकी शोध परक अभिरुचि इसी से प्रमाणित हो जाती है कि इन्होंने सिंहोर से सम्बन्धित अनेक ऐतिह्य तथ्यों का उद्घाटन किया है । अनेक शिला लेखों तथा अभिलिखित ताम्रपत्रों का अध्ययन मनन करके अपने निष्कर्ष निरूपित किए हैं। इतिहास तथा पुरा लेखों के आधार पर अनेक नई जानकारियाँ तथा उनके आधार पर विस्तृत विवेचनाएं इन्होंने प्रस्तुत की हैं ।

गोविन्द गिल्लाभाई ने प्रारम्भ में गुजराती भाषा में ही काव्य सृजन किया था । यह स्वभाविक भी है क्योंकि गुजराती इनकी मातृभाषा थी और कोई भी सहृदय कवि काव्य की रचना पहले अपनी मातृभाषा में ही सहज रूप से करता है, बाद में राष्ट्रीयता से जुड़े अनेक मनीषी, कवियों और साहित्यकारों से प्रभावित होकर उन्होंने जान लिया कि काव्यकर्ता के रूप में राष्ट्रीय छवि बनाने के लिए आवश्यक है कि वह ब्रजभाषा में काव्य रचना करें क्योंकि आधुनिककाल के प्रारंभिक चरण में भी ब्रजभाषा काव्य का वर्चस्व सर्वत्र जमा हुआ था और धीरे-धीरे खड़ी बोली गद्य के रूप में पदार्पित हो रही थी । गोविन्द गिल्लाभाई ने ब्रजभाषा के महत्व को जाना और ब्रजभाषा में काव्य रचना के प्रति वह अर्पित भी हुए ।

**भाषा ज्ञान :** गोविन्द गिल्लाभाई को गुजराती, सौराष्ट्री (काठियावाड़ी), हिन्दी, संस्कृत के अतिरिक्त अरबी, फारसी भाषा का भी सामान्य ज्ञान था, जिसके आधार पर उन्होंने अपने कोश में ऐसे शब्दों के अर्थ दिए हैं ।

बाल्यकाल से किशोर वय तक गोविन्द गिल्लाभाई ने गुजराती भाषा का सहजज्ञान प्राप्त कर लिया था और फिर उन्होंने धीरे-धीरे गुजराती के प्राचीन भक्त कवियों की रचना को

पढ़ना भी प्रारम्भ कर दिया था । इस दरम्यान उन्होंने प्रेमानन्द, दयाराम, अखा जैसे वरिष्ठ कवियों की गम्भीर और प्रसिद्ध कृतियों का वाचन कर लिया था ।

वैसे तो उनके लिए साहित्य-अध्ययन और भाषा ज्ञान के लिए कोई अनुकूल वातावरण नहीं था । केवल अतिथि साहित्यकारों का अल्पकालीन, औपचारिक सम्पर्क ही उन्हें साहित्य अध्ययन के लिए प्रेरित करता था । घर में दरबारी सेवाओं से पिता को तो मुक्ति ही नहीं मिलती थी, साहित्य और शास्त्र से तो उन्हें कोई लेना देना ही नहीं था, ऐसी विषम परिस्थिति में भी गोविन्द गिल्ला भाई ने अनेक भाषाओं की मूल अनुदित कृतियों का अध्ययन सम्पन्न किया ।

साहित्य अध्ययन की अपनी प्रवृत्ति के सन्दर्भ में वह स्वयं लिखते हैं 'संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में प्रथम प्रकाशित पुस्तकें बम्बई, बनारस, लखनऊ, कलकत्ता आदि नगरों में थीं वहाँ से जितनी संभव हुई मंगा लीं, ब्रजभाषा का अध्ययन प्रारम्भ किया, जैसे-जैसे ब्रजकाव्य की समझ आती गई इसमें विशेष, आनन्द और भी बढ़ता गया इससे उत्साह वृद्धि हुई तथा अधिक सर्वोत्तम साहित्य के ग्रन्थ प्रकाशित नहीं थे, उन्हें बड़े परिश्रमों से शिफारिशें करके मँगवाया गया तथा सम्पूर्ण भारत वर्ष से ऐसे ग्रन्थों को मंगवाकर एकत्र कर लिया आज भी ऐसे ग्रन्थों के विषय में लिखने का क्रम चालू है । इसी प्रकार संस्कृत तथा भाषा के लक्षण ग्रंथ जो अनेक स्थानों पर संक्षिप्त या कठिन होने के कारण समझ में न आते थे । उन्हें विद्वानों से पूँछकर या मूल संस्कृत के या भाषा के ग्रन्थ प्राप्त करके पाठ भेद देखकर जानने का प्रयत्न करते थे। इस प्रकार निरंतर बाल्यकाल से आजतक काव्यग्रन्थ का अध्ययन किया है फिर भी इस साहित्य समुद्र का पार नजर नहीं आता ।[14]

### विद्या संग्रह की वृत्ति

धीरे-धीरे इनके विद्याव्यसनी रूप की चर्चा चर्तुदिक बढ़ने लगी । लोग अपनी जिज्ञासा शान्त करने इनके पास आते, इन्हें अनेक नई जानकारियाँ भी देते, कुछ व्यक्तियों ने अपने संग्रहीत ग्रन्थ भी इन्हें भेंट कर दिए । संवत् 1927 में भावनगर के श्री छगनलाल संतोषराय देसाई ने कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें पुरस्कार रूप में प्रदान की, इसी प्रकार सम्वत् 1989 में पालीताना के जाड़ेजा ठाकुर केशरी सिंह से भी इन्हें पुस्तकें प्राप्त हुई ।[16]

गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने संग्रह में उस समय की प्रमुख पुस्तकें मंगाकर, खरीदकर या प्रतिलिपि कराकर एकत्र की थीं, राजस्थान तथा सौराष्ट्र के अनेक प्रशासक राजाओं के

संग्रहालयों में श्री गोविन्दगिल्लाभाई ने महत्वपूर्ण पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ तैयार करके मंगवाई थीं। इन्होंने श्री हरमान जी की सहायता से भरतपुर के राजकीय पुस्तकालय से अनेक ग्रंथों की प्रतिलिपियाँ कराके मँगाई थीं, अब वे मूलप्रतियाँ भरतपुर के संग्रहालय में भी उपलब्ध नहीं हैं। उनकी अनुपलब्ध या अल्पज्ञात पुस्तकें आपने संग्रहित कीं, उस समय देश में गोविन्द गिल्लाभाई का ग्रन्थ-संग्रह आकर्षण का केन्द्र था। अनेक वरिष्ठ इतिहासकारों ने उनकी इस शोधपरक संग्रहवृत्ति का उल्लेख किया है।[16]

**हिन्दी काव्य के प्रति अभिरुचि**

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने पहले अपनी मातृभाषा गुजराती में काव्य रचना की थी।[17]

अपनी प्रथम गुजराती काव्य रचना के संदर्भ में गोविन्दगिल्लाभाई ने स्वयं लिखा है ''इससे उसमें विशेष रुचि होने के कारण शामल भट्ट की तरह एक काव्य रचना प्रारम्भ की और कुछ लिखी भी। जैन साधु महाराज दानाचन्द जी को जब वह काव्य रचना दिखाई तो उन्होंने कहा इसमें दोहे चौपाई का नियम ठीक नहीं है, इसलिए उन्हें इन छन्दों के लक्षणों के अनुसार ठीक करना है। कवि दलपतराम डाह्याभाई द्वारा रचित पिंगलशास्त्र सारा पढ़ लिया, इससे छन्दों के नियम तथा लक्षण ठीक-ठीक समझ में आ गए। इसके बाद मित्रों के लिए समय-समय पर पत्र लिखने के लिए दृष्टान्तिक और गूढ़ कूट समस्या तथा पहेलियों आदि का संग्रह करने लगा। इससे काव्य रचना में विशेष रुचि जागृत हुई तथा जैसी-तैसी कविता काव्य रचना भी करने लगा।''[18]

कहा जाता है कि संगत और सोहबत का प्रभाव जरूर पड़ता है, गोविन्द गिल्लाभाई के विषय में कथन बिलकुल सत्य प्रमाणित हुआ। किले में अतिथि के रूप में आने वाले विद्वान, चारण, कवियों और पंडितों के सतत् सम्पर्क ने इनमें काव्य के प्रति लगाव तथा अभिरुचि पैदा की। अपनी इसी अभिरुचि के कारण वह काव्य रचना के प्रति प्रोत्साहित हुए और कालान्तर में एक श्रेष्ठ आचार्य कवि के रूप में विख्यात भी हुए। गोविन्द गिल्लाभाई के प्रमाणिक काव्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि उस समय समग्र देश में हिन्दी काव्य के प्रति लोकार्पण था तथा विशेष रूप से गुजरात और सौराट्र में हिन्दी के विद्वान कवियों, चारणभाटों तथा आचार्यो का आवागमन लगा रहता था, इससे हिन्दी काव्य के प्रति गुजरात के लोगों की अभिरुचि में सतत् वृद्धि होती रहती थी।

गोविन्द गिल्लाभाई ने गुजराती में जो रचनाएं शामल भट्ट के अनुरूप की थी वे सम्भवतः अधिक महत्वपूर्ण नहीं थी । इसीलिए कवि ने उपेक्षा से उन्हें इधर-उधर पटक दिया जिससे वह नष्ट हो गई, गुजराती में इन्होंने अन्य काव्य रचनाएँ कीं जिनमें 'विश्वदर्पण', 'कुधारा पर सुधारा' नी चढ़ाई तथा 'व्यभिचार निषेध' विशेष उल्लेखनीय थी ।[19]

गुजराती की रचनाएं प्रकाशित भी हुई थी । गुजराती में काव्य रचनाओं के प्रकाशित होने के बाद गोविन्द गिल्लाभाई की प्रसिद्धि बढ़ने लगी तथा उन्हें इस क्षेत्र में प्रोत्साहन भी पर्याप्त मिला । गुजराती में काव्य-शास्त्र के अच्छे ग्रन्थ नहीं मिलने से उन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत के लक्षण ग्रन्थों का अध्ययन किया और अध्ययन की इस पृष्ठभूमि ने ही उन्हें हिन्दी काव्य रचना के प्रति अधिक आकर्षित किया । अपनी प्रौढावस्था में उन्होंने गुजराती में स्फुट लेख, टीका, अनुवाद के अतिरिक्त विशेष और कुछ भी नहीं लिखा । गुजराती साहित्य का इतिहास गोविन्द गिल्लाभाई से इसीलिए पूर्णतः अपरिचित है ।[20]

**पारिवारिक जीवन**

गोविन्द गिल्लाभाई बचपन से अपने पिता के संरक्षण में रहे । राजदरबार में भी पिता के साथ आते जाते थे तथा अनेक प्रशासनिक अधिकारियों से तथा अतिथि कलाकारों से इनका परिचय कराया जाता था ।

चौदह वर्ष की किशोर वय में आप का विवाह सम्पन्न हो गया और पारिवारिक उत्तरदायित्व इनपर आ गया । इनका विवाह सं. 1919 में बसन्त पंचमी के दिन सिंहोर में ही श्री करसन भाई परमार की कन्या जानबाई के साथ हुआ था । सं. 1925 मे जब उनकी आयु बीस वर्ष की थी तब इन्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, इनके प्रथम पुत्र का नाम जयसिंह था ।[22]

इसके बाद सं. 1929 में शामबाई (पुत्री), सं 1932 में देव जी (पुत्र), सं. 1935 में भगवानदास (पुत्र), सं. 1939 में रायमल (पुत्र), सं. 1942 में हरिबेन (पुत्री), सं. 1944 में जीवी बेन (पुत्री), सं. 1946 में मणि बेन (पुत्री) और सं. 1948 में जब इनके सबसे छोटे पुत्र माव जी का जन्म हुआ तब इनकी आयु तैतालीस वर्ष की थी, इस प्रकार इनके यहाँ चार पुत्रियाँ तथा पाँच पुत्र पैदा हुए । इनके एक पुत्र देवजी तथा चारों पुत्रियों का अवसान बाल्यावस्था में ही हो गया था । बाद में इनके बड़े लड़के जयसिंह की भी अकालमृत्यु काशी में दरबार श्री हरिसिंह जी के साथ विषपान से सं. 1958 में हुई थी, उस समय जयसिंह तैतीस वर्ष के जवान थे । पिता गोविन्द गिल्लाभाई इस अकाल मृत्यु से बहुत व्यथित हो गए और बहुत समय तक वह घर से बाहर भी नहीं निकले । जयसिंह का विवाह दो बार हुआ था, उनके दूसरे विवाह की पत्नी

से हारजी, रामजी और रघु नामक तीन पुत्र हुए जिसमें से रघुभाई का परिवार सम्पति बम्बई में निवास कर रहा है।

पिता गिल्लाभाई खवास की मृत्यु सम्वत् 1956 में हुई थी[22] तथा माता लंविगा की मृत्यु सं. 1969 में हुई थी, सं: 1960 में गोविन्दभाई गिल्ला के घर का बटवारा हुआ जिसमें चारों भाइयों ने माता की उपस्थिति में शान्ति से बटवारा स्वीकार कर लिया। **स्मरण पोथी** में उल्लेख मिलता है कि गोविन्द गिल्लाभाई ने अपनी माता से चार रुपये में चक्की खरीदी थी, इससे अनुमान होता है कि गोविन्द गिल्लाभाई इस बटवारे से पहले ही घर से अलग हो चुके थे।

गोविन्द गिल्लाभाई का भरा पूरा परिवार था, उन्होंने अपनी संतति को बड़े लाड़ प्यार से पाला तथा उन्हें यथाशक्य संरक्षण प्रदान किया तथा उपलब्ध शिक्षा भी दिलवाई, उनके विवाहादि करके घर बसाए, यहाँ तक कि बड़े लड़के जयसिंह की मृत्यु के बाद अपने पौत्रों की शिक्षादीक्षा का इन्होंने समुचित प्रबन्ध किया।

सं. 1982 में ज्येष्ठ मास 14 गुरुवार को आपने महाप्रयाण किया, उस समय आप की आयु 77 वर्ष की थी तथा अपने पीछे आपने भरा पूरा परिवार छोड़ा था। गोविन्द गिल्लाभाई रोजमर्रा की घटनाओं को अपनी निजी डायरी में लिख लिया करते थे। जिसे वह **स्मरण पोथी** कहा करते थे। सं. 1982 तक प्रायः सभी प्रमुख घटनाएं इन्होंने **स्मरण पोथी** में दर्ज की हैं। सं. 1976 में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया, इसके बाद उन्होंने डायरी लेखन आगे नहीं बढाया अतः इसके बाद की घटनाओं के अन्तः साक्ष्य नहीं मिलते।

स्मरण पोथी के आधार पर इनकी जीवन चर्या तथा प्रमुख घटनाओं को प्रामाणिक रूप में जाना जा सकता है।

देशाटन :

वैसे तो गोविन्द गिल्लाभाई किशोरावस्था तक अपने पिता के सानिध्य में ही रहे और इन्हें सिहौर से बाहर जाने का मौका नहीं मिला, किन्तु बाद में उन्होंने भारत वर्ष के अनेक नगर-प्रान्तों की यात्राएं कीं, जो इनकी साहित्यिक प्रवृत्ति से ही सम्बन्धित है।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि गोविन्द गिल्लाभाई की रुचि साहित्य के अनुसंधान पक्ष में अधिक रही थी। प्राचीन एवं प्रसिद्ध कवियों एवं साहित्यकारों की रचनाओं को एकत्र करना, प्रतिलिपियाँ तैयार करना, उन्हें व्यवस्थित रूप से संपादित करना तथा जहाँ-जहाँ इस प्रकार का साहित्य प्राप्त होता, वहाँ जाकर स्वयं उसका संग्रह-संयोजन करना, इनके

स्वभाव में जैसे समाहित था ।

अपने गुजराती के प्रथम ग्रंथ विश्वदर्पण के मुद्रण हेतु इन्होंने सर्वप्रथम भावनगर की यात्रा की थी, इसका उल्लेख स्वयं कवि ने स्मरण पोथी में किया है । इन्होंने सं. 1925 में भावनगर की यात्रा की जो सिंहौर से बहुत दूर नहीं है । सं. 1927 में इन्होंने संस्कृत तथा हिन्दी के अनेक ग्रंथ भावनगर से प्राप्त किए थे । भावनगर में श्री छगनलाल संतोषराय देसाई तथा श्री केसरीसिंह जाड़ेजा द्वारा इन्हें अनेक दुर्लभ ग्रंथों की प्राप्ति हुई थी ।[23]

सं. 1928 में आप बम्बई प्रथम बार गए थे, दूसरी बार सं. 1929 में आप बम्बई गए और अपनी कुछ रचनाओं के प्रकाशन की व्यवस्था भी वहाँ की सं. 1930 तथा सं. 1933 के मध्य आप तीन बार बम्बई गए थे तथा वहाँ से अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथ खरीदकर आप सिहौर लाए थे । बाद में आप सं. 1934 में आजीविका हेतु बम्बई गए थे । जहाँ इन्होंने शाह भीमसिंह माणेकलाल के ग्रंथसागर प्रेस में प्रूफरीडिंग तथा ग्रंथ सुधारक के रूप में नौकरी की ।[24]

सम्वत् 1938 में एकबार पुनः बम्बई गए, तब इनके साथ हिन्दी प्रेमी ठाकुर श्री हरिसिंह जी रावल भी थे । इसके बाद भी अनेक बार इनका बम्बई आना जाना हुआ था । उस समय बम्बई जाना किसी विदेश यात्रा से कम महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता था ।

सं. 1952 में आप उत्तरप्रदेश की यात्रा पर गए, सर्वप्रथम भरतपुर के राजकीय पुस्तकालय का अवलोकन करने गए, उस समय बरल दरबार श्री हरिसिंह जी की कुंवरी कुसुमावती की सगाई मोरबी दरबार के भाई हरकम जी (जो उस समय भरतपुर राज्य के मैनेजर के रूप में कार्य कर रहे थे) के साथ हुई थी, उनके साथ काम करने के लिए गोविन्द गिल्लाभाई को भरतपुर भेजा गया था, उस समय भरतपुर के साथ-साथ मथुरा, आगरा तथा ब्रज के अन्य अनेक स्थलों की आपने यात्राएं कीं तथा वहाँ से ब्रजभाषा के अनेक हस्तलिखित ग्रंथों की नकल करवाकर अपने साथ ले आये थे ।[25]

सं. 1953 में आप बढ़वाण दरबार श्री बालसिंह जी की कुंवारी की सगाई में करौली गए । वहाँ से भी किसी बिहारीलाल अग्रवाल से अनेक दुर्लभ ग्रंथ लेकर सिंहोर आए थे ।[26]

इस प्रकार आप ने बम्बई, राजकोट, द्वारका, पोरबन्दर, जूनागढ़ आदि की यात्राएं कीं । मथुरा, इलाहाबाद, बनारस में आप अपनी साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में ही जाया करते

थे, उनकी इसी यात्राभरी प्रवृत्तियों ने उन्हें देश के जाने माने साहित्यकारों से परिचय भी करवा दिया था। शीघ्र ही सम्पूर्ण देश में गोविन्द गिल्लाभाई अपनी वैविध्यपूर्ण प्रतिभा और साहित्यिक गति विधियों के कारण प्रख्यात हो गए।

**आजीविका**

गोविन्द गिल्लाभाई का सम्पर्क और सम्बन्ध अनेक राजघरानों से था। उनके पिता सिंहोर के किले में आतिथ्य शाला के मुख्य प्रबन्धक थे इसलिए पिता गिल्लाभाई का सम्पर्क उस समय के विशेष राजदरबारों से हो गया था और पिता के साथ-साथ गोविन्द गिल्लाभाई का सम्पर्क भी इन लोगों से होता गया।

पं. अक्षयवर मिश्र के अनुसार गोविन्द गिल्लाभाई उस समय राजकोट के किंग कालेज में काम कर रहे थे। (बिहार बन्धु, साप्ताहिक, बंकीपुर सं. 1966 भाद्रपक्ष 12 (11-9-1999) भाग 38 अंक 36) डॉ. माणिक लाल चतुर्वेदी ने इस कथन का तर्कयुक्त खण्डन किया है।[27]

मिश्रबन्धु विनोद में उल्लेख है कि बहुत दिनों तक आप सरकारी सेवा में रहे हैं। (मिश्रबन्धु विनोद भाग-3 पृष्ठ 1268 सं. 2176) किन्तु माणिक लाल चतुर्वेदी ने इस कथन को निराधार सिद्ध किया है।[28]

इसके बाद भावनगर में दरबारी जूना शोधखाना (राजकीय प्राचीन शोध विभाग) में दो वर्ष तक नौकरी की, इसके बाद रावल श्री हरिसिंह जी के यहाँ इन्होंने बहुत समय तक नौकरी की, इस राजघराने में इनका सम्मान भी था, इसी कारण राजकुँवरी की सगाई में ये भरतपुर गए थे। बाद में इनके पुत्र जयसिंह भी इन्हीं हरिसिंह जी के साथ रहते थे और इनसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखते थे, इन्हीं के साथ जयसिंह काशी गए थे जहाँ इन दोनों की विषपान से मृत्यु हो गई थी, बाद में सं. 1957 में आपने पालीताना के दीवान गणपतराम जी के यहाँ नौकरी की और एक वर्ष तक वहाँ काम करते रहे।

इनकी प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा के कारण अनेक राजदरबारों में इन्हें पुरस्कृत किया जाता था, भेंट दान आदि प्राप्त होते थे, इन्होंने सिंहोर में अपना मकान भी बनाया तथा कुछ धन संग्रह भी किया।

**व्यक्तित्व**

व्यक्तित्व में व्यक्ति की सम्पूर्णता का द्योतन होता है। शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक स्तर उसका समग्र परिचय ही व्यक्तित्व का मापदण्ड बनता है। व्यक्ति की शारीरिक भंगिका,

उसका बोलना सोचना, रहन-सहन, लिबास और उसकी अपनी भाषा तथा अपने विचार उसके व्यक्तित्व में समाहित होते हैं ।

शारीरिक पक्ष से गोविन्द गिल्लाभाई पूर्ण स्वस्थ तथा मनोहर व्यक्तित्व के स्वामी थे । लम्बा भरा पूरा बदन, बड़ी-बडी नम्रमुखी मूँछें, काठियावाड़ी पगड़ी, बगलबन्दी, धोती तथा हाथ में घडी उनके व्यक्तित्व की प्रमुख पहिचान थी ।[30]

गोविन्द गिल्लाभाई को कोई व्यसन नहीं था । बीडी, सिगरेट, शराब का तो पारिवारिक निषेध था ही अन्य प्रकार के तम्बाकू, भांग, गांजा आदि के सेवन से भी वह दूर थे, और इसीलिए वह अधिकतर स्वस्थ ही रहे आए । **स्मरण पोथी** में उन्होंने कहीं भी अस्वस्थता की चर्चा नहीं की, जबकि अपनी पौत्रवधू के आँख के मोतियाबिन्दु के ऑपरेशन की चर्चा है । सम्वत् 1974 में सिंहोर में प्लेग की बीमारी फैली थी तब गोविन्द गिल्लाभाई अपने परिवार के साथ कुछ समय के लिए बरल चले गए थे ।[31] उन्होंने स्वयं भी एक स्थान पर लिखा है कि अभी विक्रम सम्वत् 1967 का चलता है और हमारा जन्म विक्रम सम्वत् 1905 में होने से हमको (62) बासठ वर्ष हुए हैं परन्तु कोई जाति का दुर्व्यसन नहीं होने से शरीर सम्पत्ति अच्छी रही है ।[32]

गोविन्द गिल्लाभाई वैचारिक रूप में बहुत जागरूक तथा स्वच्छन्द प्रवृत्ति के रहे थे । विगत परम्पराओं के प्रति उनका रुझान था, तो सामायिक परिवर्तित मूल्यों के प्रति भी वह आस्थावान थे । स्वाभिमान के साथ-साथ विनम्रता उनकी परम विशिष्टिता थी, उन्होंने स्वयं आत्मकथा लिखकर अपने व्यक्तित्व के विषय में पर्याप्त प्रकाश डाला है । गोविन्द ग्रंथ माला में इन्होंने अपना पूर्ण परिचय दिया है । इसका कारण स्पष्ट करते हुए आप लिखते हैं, 'हमारा परिचय कवि श्रेणी में देना उचित है या अनुचित है, यह विशेष हम कुछ नहीं कह सकते, यह काव्य मर्मज्ञ की इच्छा पर रखते हैं परन्तु गोविन्द नाम से बहुत से कवि हो गए हैं, उनमें यह ग्रंथों के कर्ता कौन हैं । यह जानने के लिए कुछ परिचय की जरुरत जान के थोड़ा-सा हाल नीचे लिखते हैं ।[33]

गोविन्द गिल्लाभाई ने अपना आत्म परिचय गुजराती और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में लिखकर आगामी शोध छात्रों और जिज्ञासुओं के लिए अध्ययन की सुविधा प्रदान की है ।

डॉ. माणिकलाल चतुर्वेदी ने इनके विषय में ठीक ही कहा है कि इनके व्यक्तित्व में दो बातें सहज ही स्पष्ट हो जाती हैं, वस्तुपरक वैज्ञानिक वृत्ति तथा स्वात्म केन्द्रस्थता अथवा इसके विषय में अत्यधिक सचेतता परन्तु इस स्वात्म-केन्द्रस्थता का अर्थ विनय शून्यता नहीं लेना

चाहिए । भारतीय संस्कृति की परम्परा प्राप्त विनयशीलता इनकी कृतियों में देखी जा सकती है ।[34]

स्वयं गोविन्द गिल्लाभाई इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं, 'विद्वान वृन्द की हम प्रार्थना करते है कि यह हमारा पहला परिश्रम है और स्वभाषा गुजराती होने से शुद्ध हिन्दी भाषा होना असम्भव है, तथापि भाषा में रखने का साहस किया है । इसलिए उसमें भूल होय तो सुधार लेने की कृपा कीजिएगा ।[35]

गोविन्दगिल्लाभाई शास्त्र विवेचना के प्रसंग में कहीं भी भावुकता का शिकार नहीं बने, उन्होंने अन्य कवियों की जहां कृतित्व-विवेचना की है, वहाँ शास्त्रोक्त आचार संहिता को ही प्रधानता दी है, हर विषय में उनका मूल्यांकन लगभग तटस्त ही रहा है ।

गोविन्द गिल्लाभाई स्वभाव से अत्यन्त मिलनसार व्यक्ति थे, गुजराती साहित्यकारों से उनका सम्पर्क अत्यल्प ही था । किन्तु हिन्दी के वरिष्ठ कवियों, पत्रकारों तथा समालोचकों के साथ इनका घनिष्ठ सम्बन्ध था । अपनी विद्वता कारियित्री प्रतिभा तथा वरिष्ठ रचनाओं के कारण सर्वत्र इनका सम्मान किया जाता था ।

मिश्रबन्धु इन्हें मित्रवत आत्मीय सम्मान प्रदान करते थे, शोधपरक सामग्री भेजने के उपलक्ष में मिश्रबन्धु लिखते हैं, 'हमारे प्राचीन मित्र और हिन्दी जगत के सुपरिचित स्वर्गीय कवि गोविन्द गिल्लाभाई ने काठियावाड़ के कवियों तथा गद्यलेखकों की विवेचना सहित एक वृहद् सूची भेजी जिससे प्राप्य 500 अज्ञात लोगों का हमें पता चला ।'[36]

भारतवर्ष के तत्कालीन जिन प्रधान साहित्यकारों से गोविन्द गिल्लाभाई के घनिष्ठ सम्बन्ध थे, उनमें मथुरा के कविरत्न नवनीत चतुर्वेदी, जोधपुर के मुंशीदेवी प्रसाद, डुँमराव के अक्षयवर मिश्र, विप्रचन्द्र कवि, डुँमराव के श्री नकछेदी तिवारी, अजान कवि आदि उल्लेखनीय हैं । कच्छ भुज की ब्रजभाषा काव्य पाठशाला के प्रधानाचार्य श्री जीवाराम अजरामर गौर तथा हरिसिंह गोहिल के साथ भी इनकी घनिष्ठता थी । भुज के प्रख्यात कवि गोप इनको अपना गुरू मानते थे । बनारस के जगन्नाथदास रत्नाकर, बाबू श्याम सुन्दरदास, गुलाबराय आदि से भी इनका पत्र व्यवहार था । मिश्र बन्धुओं में से एक श्री सुखदेव बिहारी मिश्र ने इनकी काव्य रचना गोविन्द ग्रन्थमाला भाग-1 के विषय में अपना मन्तव्य देते हुए लिखा कि 'ए महाशय हिन्दी के एक परम प्रसिद्ध प्राचीन लेखक तथा सुकवि हैं यावज्जीवन इन्होंने हिन्दी के हित में प्रयत्न किया है और वह श्रम सब प्रकार से प्रशंसनीय है ।'[39]

इसी प्रकार श्री अक्षयवर मिश्र विप्रचन्द कवि कहते हैं, 'आपके सब ग्रंथ हिन्दी भाषी समस्त जनों के अभिबंद्य पूज्य और आदरणीय हैं।'[40] प्रकृति से धर्म के प्रति आस्थावान तथा चिन्तन से पौराणिक विमर्श के पक्षपाती गोविन्द गिल्लाभाई ने ब्रजसूचिकोपनिषद का अनुवाद किया था। (स्मरणपोथी पृष्ठ-3) धार्मिक मान्यता को इन्होंने सभी देवी देवताओं की वन्दना करके स्पष्ट की है। इन्होंने ब्रह्मा, विष्णु, राम, कृष्ण, महेश, कार्तिकेय, गणेश, हनुमान, पार्वती, राधा, कामदेव, गंगाजी आदि सभी प्रमुखदेवी देवताओं की समान रूप से प्रार्थना की है। तथा सभी में अपना समभाव व्यक्त किया है।

राधाकृष्ण इनके आराध्य थे, यही कारण है कि इनकी भक्ति का तथा काव्य का केन्द्र राधाकृष्ण के इर्द गिर्द ही अधिक घूँमा फिरा है।

जहाँ इन्होंने शृंगार वर्णन में आलम्बन के रूप में राधाकृष्ण का चित्रण किया है, वहाँ वह रीतिकालीन काव्य प्रवृत्ति के अनुरूप राधाकृष्ण को नायिका और नायक के रूप में स्वीकार करते हैं।

ज्ञान पिपासा गोविन्द गिल्लाभाई में इतनी थी कि आपने बंगला, मराठी तथा अंग्रेजी के जानकारों से इन भाषाओं के साहित्य के विषय में अपनी जिज्ञासा व्यक्त की थी।

साहित्य का अनुसंधान करते समय ऐतिहासिक घटनाओं को तथ्यपूर्ण और प्रमाणिक ढंग से प्रस्तुत करने में इन्हें विशेष अभिरुचि थी और इनके लिए गोविन्द गिल्लाभाई यथाप्राप्य सामग्री का संकलन करते तथा उनका गम्भीर अध्ययन मनन करने के बाद ही लेखन प्रारम्भ करते। इस सन्दर्भ में उन्होंने प्रसिद्ध और महान व्यक्तियों के विषय में भी अनेक प्रामाणिक तथा दुर्लभ तथ्यों को उद्घाटित किया है। जैसे **भाषा कविता के** चरित्र नामक ग्रंथ के अतिरिक्त परिशिष्ट में उन्होंने जलालुद्दीन शाह अकबर बादशाह के विषय में तथ्यात्मक जानकारी प्रस्तुत करते हुए लिखा है -

'अकबर बादशाह का जीवन चरित्र जगविख्यात है - अध्ययन आधार के लिए ग्रंथ हैं- अकबरनामा, आइने अकबरी, तबाकात अकबरी तथा तवारीख अबदुल्ला दरबदाउनी आदि जो-जो ग्रंथ फारसी भाषा में है और उनका अंग्रेजी में अनुवाद भी हो गया है वैसे हिन्दी, बंगाली, मराठी और गुजराती आदिक अनेक देशीय भाषाओं में हिन्द के बादशाहों की तवारिख बनाई है। मदरसों में बालकों को पढ़ाई जाती है, जिसे सब लोग जानते हैं, इसलिए यहाँ कुछ जरुरत नहीं है किन्तु यह महाप्रतापी बादशाह हिन्दी भाषा के कवि थे। इसलिए हम इनको कवि श्रेणी में

गिनके इनका कुछ हाल कवि तरीके से लिखना चाहते है ।'[39]

गोविन्द गिल्लाभाई ने अपनी इस प्रवृत्ति का परिचय स्थान-स्थान पर दिया है, उन्होंने छत्रपति शिवाजी के विषय में भी जब लिखना प्रारम्भ किया तो कुछ आधिकारिक महत्वपूर्ण जानकारियां अवश्य प्रस्तुत की थीं - ''सतारा का राजवंश माहेला पुरुष सन् 1874 में महारानी जी के द्वारा नियुक्त किया, अंग्रेजी अपील से उतारा गया, वृत-4 अपने ऐतिहासिक ज्ञान की प्रामाणिकता देने के लिए उन्होंने पहले सूर्यवंशी राजाओं की वंशावली दी है । जिसमें शिवाजी के पूर्वजों का नामोल्लेख है और अन्त में 156वें सूर्यवंशी क्षत्रिय के रूप में छत्रपति शिवाजी का उल्लेख किया है ।'[40] इसी प्रकार अवध की बेगम प्रथम भाग में उनकी ऐतिहासिक जानकारी का नमूना देखिए -

'वजीर नसरुद्दीन के मरने के पीछे अवधका नवाब सफदरजंग देहली के बादशाह का वजीर नियुक्त हुआ था । नसीसम भले अवध के नवाब लोग बराबर वजीर कहलाते आए पर नवाब सफदरजंग का लड़का वजीर शुजाउद्दौला अवध का नवाब था ।'[41]

साहित्य के विषय में ही कवियों के मूल तथ्यात्मक परिचय उन्होंने एकत्र किए और सप्रमाण उन्हें प्रस्तुत किए हैं । उन्होंने हिन्दी के अनेक अल्पज्ञात तथा अज्ञात कवियों के विषय में विस्तृत विवरण सम्पादित किए जिसका समर्थन मिश्र बन्धुओं ने किया है तथा इनसे ही प्राप्त सूचनाओं के आधार पर लगभग 500 हिन्दी कवियों का विवरण उन्होंने 'मिश्रबन्धु विनोद' में सम्पादित किया है ।[42]

जहॉ भी उन्होंने कवियों के विषय में सूचनाएं दी हैं । वहाँ उन्होंने छोटी-छोटी घटनाओं का भी तिथि और सन्दर्भ सहित वर्णन किया है यथा कवि जीवराम अजरामर के जीवन चरित्र के विषय में वह कहते हैं - 'कवि जीवराम' जन्म अश्विन सूदी 7 सं. 1923 (शाके 1788) । गाँव के ही स्कूल में कक्षा 6 तक अध्ययन । भुज की नं. 1 दरबारी स्कूल में मास्टर जगन्नाथ के सानिध्य में परीक्षाएं दीं । अहमदाबाद में ट्रेनिंग कॉलेज में तीनवर्ष में अध्ययन पूर्ण किया सम्वत् 1943 कबीर पंथियों के स्थान पर बारह महीने नौकरी की । ..... कच्छ दरबार के शिक्षा विभाग में सर्वप्रथम लखपतगाँव में 40 कोड़ी के पगार से शिक्षक बने ।'[43] उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात होता है कि आज की खोजी पत्रकारिता की तरह इन्होंने जब भी किसी विषय को उठाया तो उससे सम्बन्धित सभी सम्भाव्य तथ्यों को एकत्र किया और अपूर्ण

जानकारियों को पूरा करके ही अपना लेख सम्पन्न किया ।

यह उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की विशेषता थी । उनके बहुमुखी प्रातिभ व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ थीं जो उन्हें अन्य साहित्यकारों से एक अलग पहचान प्रदान करती थी । यथा-

**बहुभाषा विद -**

गोविन्द गिल्लाभाई की मातृभाषा सौराष्ट्री या काठियावाड़ी गुजराती थी । इस कारण उन्होंने गुजराती की प्राचीन काव्य परम्परा का गम्भीर अध्ययन किया था और गुजराती में उन्होंने तीन ग्रंथों का प्रणयन भी किया जो प्रकाशित भी हुए थे उनके गुजराती ग्रंथ है -

1. विश्वदर्पण, 2. कुधारा पर सुधारानी चढ़ाई तथा 3. छिनाल बावनी

इससे यह तो ज्ञात होता ही है कि गुजराती भाषा का उन्होंने गम्भीर अध्ययन किया था तथा इस भाषा पर उनका पूरा अधिकार भी था ।

संस्कृत भाषा का भी उन्हें पूरा ज्ञान था, अपने शास्त्रीय पक्ष को गम्भीरता से जानने के लिए उन्होंने संस्कृत के लक्षण ग्रंथों तथा महाकाव्यों का अध्ययन किया था उन्होंने संस्कृत ग्रंथों का गुजराती और हिन्दी में अनुवाद भी किया था - यथा -

1. अमरकोश
2. अभिधान चिन्तामणि नाममाला हेमकोश
3. हेमशेष कोश
4. काव्यप्रकाश प्रथम
5. साहित्य दर्पण
6. भानुदत्त कृत रसतरंगिनी
7. ताराचरम तर्करत्न कृत शृंगार रत्नाकर
8. रस मीमांसा - गंगारामकृत
9. कवि रत्नाकर कृत वक्रोक्ति पंचाशिका
10. अमर शतक
11. चौर पंचाशिका
12. ब्रज सूचिकोपनिषद् - शंकराचार्य कृत
13. वात्सायन कामसूत्र की अनुक्रमणिका आदि ।

इससे ज्ञात होता है कि उन्हें संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान था । मराठी भाषा का भी

उन्हें ज्ञान था । कवि जीवराम अजरामर के जीवन चरित्र को लिखते समय उन्होंने कुछ मराठी पत्र पत्रिकाओं से सामग्री एकत्र करने का उल्लेख किया है ।[46] इससे उनके मराठी भाषा के ज्ञान का संकेत मिलता है ।

ब्रजभाषा हिन्दी का उन्हें पांडित्यपूर्ण अधिकारिक ज्ञान था । सम्पूर्ण देश में वह हिन्दी ब्रजभाषा के वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में समादृत थे । हिन्दी क्षेत्र के किसी भी श्रेष्ठतम् कवि की श्रेणी में उनकी रचनाएं तुलनीय रही हैं । उन्होंने अपने समय में जितना गंभीर शोध परक कार्य ब्रजभाषा-साहित्य के लिए किया उतना किसी भी अहिन्दी भाषी साहित्यकार ने नहीं किया। ब्रजभाषा के वरिष्ठ साहित्यकारों में उनकी ओजस्विता चिर परिचित रही है । उन्हें अंग्रेजी का सतही ज्ञान था ।

इस प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई अनेक भाषाओं से परिचित थे, गुजराती तथा हिन्दी में उन्होंने अनेक ग्रंथों का प्रणयन किया था ।

**बहुमुखी प्रतिभा के धनी**

कवि रत्न गोविन्द गिल्लाभाई बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्य जीवी व्यक्ति थे । उनकी कुछ विशिष्टताएं निम्नांकित है -

**शोध अन्वेषक :** उनके बहु विषयक कृतित्व का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि वह एक जागरूक शोध अन्वेषक थे और उन्होंने बडे ही वैज्ञानिक ढंग से सप्रमाण ग्रंथों को सम्पादित किया था, देश के अनेक नगरों में जाते, वहाँ के ग्रंथालयों का अवलोकन करते तथा स्वयं ग्रंथों को प्रतिलिपिबद्ध करके अपने संग्रह में सुरक्षित रखते, दूर-दूर के साहित्यकारों से आधिकारिक जानकारियाँ प्राप्त करते तथा अपने अनुसंधानकार्य में सतत् लगे रहते थे । वर्तमान शोध के निर्धारित मूल्यों के तहत भी उनके कार्य को परीक्षित किया जा सकता है ।

**कुशल - अनुवादक :**

गोविन्द गिल्लाभाई एक कुशल अनुवादक थे, उन्होंने गुजराती, मराठी, अंग्रेजी तथा संस्कृत से साहित्यिक लेखों तथा ग्रंथादि का अनुवाद किया था । जिसका विवरण विगत पृष्ठों पर दिया जा चुका है ।

**कुशल सम्पादक :**

गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक ब्रजभाषा ग्रंथों का सम्पादन किया है । अल्पज्ञात या अज्ञात साहित्यिक ग्रंथों की खोज की तथा तथ्यों को संग्रहीत किया, प्राप्य सभी विवरणों को

आधार बनाकर एक आधिकारिक पाठ देकर उसे सम्पादित किया । उन्होंने अनेक वरिष्ठ कवियों की कृतियों का सम्पादन किया है, जिसकी विस्तृत विवेचना आगामी अध्यायों में की जा रही है ।

**आचार्य कवि :**

गोविन्द गिल्लाभाई अपने समय में ही ब्रजभाषा के प्रतिष्ठित कवियों की पंक्ति में स्थापित हो चुके, उन्होंने गोविन्द हजारा, प्रेमप्रभाकर, राधारूपमंजरी, साहित्य रत्नाकर संग्रह जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की, लक्षण ग्रंथों का निर्माण किया, नायिका भेद, काव्य भेद, दोष गुण, अलंकार, रस, छन्द आदि के विषय में ग्रंथ रचना की, इन सबसे उनका अध्ययन-गाम्भीर्य तो स्पष्ट होता ही है, साथ में उनका आचार्यत्व भी इनसे प्रमाणित होता है ।

**प्रतिष्ठित गद्यकार :**

गोविन्दगिल्लाभाई एक कवि के रूप में ही प्रतिष्ठित नहीं थे, बल्कि गद्य लेखन के विषय में भी उनका कृतित्व उल्लेखनीय है । गोविन्द गद्य सागर[45] में उन्होंने अनेक छोटे बड़े ग्रंथों को संग्रहीत किया है ।

**समालोचक :**

ब्रजभाषा में समालोचना साहित्य उस समय तक बहुत अधिक प्रतिष्ठित नहीं हो पाया था, हिन्दी के कुछ विद्वान इस दिशा में प्रयत्नशील थे । आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मिश्रबन्धु, लाल भगवानदीन, नवनीत चतुर्वेदी, जगन्नाथदास, रत्नाकर, बाबूश्याम सुन्दरदास आदि इन दिशा में अग्रसर थे । गोविन्द गिल्लाभाई ने ब्रजभाषा में ही ब्रजभाषा के साहित्य की विस्तृत समालोचनाएं प्रस्तुत करके एक नया अध्याय प्रारम्भ किया था । उन्होंने कवियों के कृतित्व का परिचयात्मक विवरण देकर, उनका तुलनीय विश्लेषण और मूल्यांकन भी प्रस्तुत करके अपने कुशल आलोचक रूप को भी प्रगट किया है । इस प्रकार गोविन्द गिल्लाभाई एक कुशल समालोचक रूप में भी प्रतिष्ठित होते हैं ।

पत्र लेखन, रिपोर्ताज तथा संस्मरण जैसे आधुनिक विकसित गद्य विधाओं में भी गोविन्द गिल्लाभाई उस समय पर्याप्त लेखन किया था, इससे इनकी जागरुकता प्रमाणित होती है ।

इतिहासविद् गोविन्द गिल्लाभाई ने अनेक दुलर्भ ऐतिह्य तथ्यों का अन्वेषण कर ऐतिहासिक दस्तावेजों को तैयार किया था । इतिहास के आधार पर अपनी महत्वपूर्ण सूचनाएं एकत्र की थी, यह प्रवृत्ति उनकी इतिहास विज्ञता को प्रमाणित करती है ।

इस प्रकार समग्र रूप से उनके व्यक्तित्व का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि गोविन्द गिल्लाभाई बहुमुखी प्रतिभा के धनी एक ऐसे अहिन्दी भाषी हिन्दी साहित्यकार थे, जिन्होंने अपने वरिष्ठ और महत्वपूर्ण साहित्य प्रदान से हिन्दी भण्डार को अक्षय कोश प्रदान किए तथा अपनी स्वयं की सरल रचनाओं से अपने प्रातिभ व्यक्तित्व की झलक दिखाई थी ।

# सन्दर्भ ग्रन्थ


1. गोविन्द ग्रन्थ माला (प्रथम भाग) उपोद्घात - गोविन्द गिल्लाभाई - पृष्ठ -17
2. गोविन्द ग्रन्थ माला (प्रथम भाग) पृष्ठ - 19
3. वही, पृष्ठ - 20
4. वही, पृष्ठ - 17
5. वही, पृष्ठ - 17
6. History of KATHIYAVAD - Capt. Wilber-force-Bell- Page 124
7. आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई, डॉ. माणिकलाल चतुर्वेदी पृ. 81
8. गोविन्द ग्रन्थमाला (प्रथमभाग) उपोदघात पृष्ठ - 19
9. वही, पृष्ठ - 20
10. स्मरण पोथी - पृष्ठ - 2 (गोविन्द गिल्लाभाई)
11. गोविन्द ग्रन्थमाला (प्रथमभाग) पृष्ठ - 22
12. स्मरण पोथी - पृष्ठ - 2 (गोविन्द गिल्लाभाई)
13. वही, पृष्ठ - 14
14. गोविन्द ग्रन्थमाला (प्रथमभाग) उपोदघात - पृष्ठ - 20
15. स्मरणपोथी - पृष्ठ - 4
16. वही, पृष्ठ - 5
17. हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्रशुक्ल पृ. 555
18. गोविन्द ग्रन्थमाला (प्रथमभाग) उपोदघात पृष्ठ - 20
19. स्मरणपोथी, पृष्ठ - 4
20. वही, पृष्ठ - 5
21. आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई डॉ. माणिकलाल चतुर्वेदी पृष्ठ - 87
22. स्मरण पोथी - पृष्ठ - 16
23. स्मरण पोथी - पृष्ठ - 17
24. वही, पृष्ठ - 20
25. वही, पृष्ठ - 21
26. आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई - डॉ. माणिकलाल चतुर्वेदी पृ. 89

27. वही. पृष्ठ - 90

28. वही. पृष्ठ - 91

29. आचार्य कवि गोविन्दगिल्लाभाई - डॉ. माणिकलाल चतुर्वेदी पृ. - 91

30. वही, 91

31. म. स. विश्वविद्यालय, वडोदरा के हिन्दी कक्ष में इसी प्रकार का एक चित्र लगा हुआ है

32. स्मरणपोथी - पृष्ठ - 25

33. स्मरणपोथी - पृष्ठ - 27

34. गोविन्द ग्रन्थमाला - उपोद्घात - पृष्ठ - 21

35. आ. कवि गोविन्द गिल्लाभाई - डॉ. माणिकलाल चतुर्वेदी - पृष्ठ - 99

36. गोविन्दग्रन्थमाला (प्रथमभाग) पृष्ठ - 16

37. मिश्र बन्धु विनोद (प्रथमभाग) भूमिका - 17

38. गोविन्द ग्रन्थमाला (प्रथमभाग) अभिप्राय - पृ. 27

39. वही. पृष्ठ - 24

40. भाषा कविन के चरित्र, प्राचविद्या पीठ, म.स. विश्व विद्यालय, बड़ौदा-ग्र.सं.209 हिन्दी विभाग, (पाण्डुलिपि सेक्सन)

41. छत्रपति महाराज शिवाजी तथा भूषणकृत शिवराज भूषण सम्बन्धी याद-बुक; संक्षिप्त जीवन तथा डायरी से - म.स. वि. विद्यालय बड़ौदा- प्राच्य विद्यापीठ पाण्डुलिपि विभाग हिन्दी ग्र.सं. 199

42. वही - ग्र. सा. पा. 199

43. मिश्रबन्धु विनोद भाग - 1 - भूमिका पृ. - 7

44. प्राच्यविद्यापीठ म.स. वि. वि. हिन्दी ग्रंथ सं. 199

45. स्मरम पोथी पृष्ठ - 15

46. प्राचविद्यापीठ म.स.वि.वि. बड़ौदा, हिन्दी ग्रन्थ 199